राजा सलहेस और मिथिलांचल

मिथिलांचल में लोककला की लंबी परंपरा है, चाहे यह चित्रकला हो, लोकगीत हो या लोकनाट्य। आदिकाल से ही श्रमजीवी समाज ही सर्वसाधनों से वंचित समाज भी रहा है। ऐसे में उसने अपने मनोरंजन के लिए, सामाजिक संबंधों की सुरक्षा के लिए और अपने लिए संघर्षों की पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए लोककलाओं में अपनी सामासिक अभिव्यक्ति का माध्यम खोजा और उसे अपनाया। ये ज्यादातर मौखिक परंपरा के थे और उसी परंपरा में आज भी निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। सामाजिक अनुक्रम में सबसे निचले पायदान पर खड़े इनमें से ज्यादातर लोग शूद्र थे और दलित भी।

शूद्रों और दलितों ने अपने लोकमनोरंजन हेतु जो साधन विकसित किये, उसमें उनके सामाजिक संघर्ष की आवाज स्पष्ट सुनाई पड़ती है। संभवत: वही आवाज धीरे-धीरे लोकगाथाओं में बदलती गयी। उन्हीं लोकगाथाओं ने समाज के दबे कुचले वर्गों को वह स्वप्न दिखाए और समाज में अपना स्थान हासिल करने का जज्बा पैदा किया, जहां वह आज स्थित है। इसमें लोकगाथाओं पर आधारित चित्रकला, लोकगाथाओं की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों और लोकनाट्यों का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्हीं लोकगाथाओं में से एक है राजा सलहेस की लोकगाथा, जो बिहार में विशेषकर दुसाध और पासवान समाज की सामाजार्थिक अभिव्यक्ति का माध्यम है।

मिथिलांचल में राजा सलहेस की लोकगाथा पर आधारित चित्रकला की पहचान बहुत पुरानी नहीं है और न ही उस पर आधारित लोकनाट्यों की। यह पिछले सौ-सवा सौ वर्षों में सामने आयी है। चित्रकला में राजा सलहेस का चित्रण पहले-पहले महज अलंकारिक था जिसमें 80-90 के दशक में अपने लिए संघर्ष के चिंतन की तीक्ष्णता आती है। लेकिन लोकगाथाओं की प्रस्तुतियों और लोकनाटकों में उनकी आवाज कबसे मुखर हुई उसका ठीक ठीक अनुमान लगा पाना संभव नहीं है।

इस बारे में पहली महत्वपूर्ण खोज थी जार्ज ए. ग्रियर्सन की, जिन्होंने भारत में अपने भाषाई अध्ययन के क्रम में बिहार में सलहेस की लोकगाथा को एक डोम गाथा गायक के मुंह से सुना और 1881 में पहली बार उसका मुद्रित स्वरूप अपनी पुस्तक 'मैथिली क्रेस्टोमैथी एण्ड वॉकेबुलरी' में सामने रखा। चित्रकला में यही काम किया विलियम जी. आर्चर ने, जिन्होंने 1934 में आए भूकंप के बाद मिथिला के गांवों में ध्वंसित दीवारों पर बने चित्रों को देखा, उनकी फोटोग्राफी की और बाद में एक बड़े फलक पर उसे उजागर किया। उनके इस काम को पहले उनकी पत्नी और बाद में ऑल इंडिया हैंडिक्राफ्ट बोर्ड के डायरेक्टर रहे पुपुल जयकर आगे बढ़ाया।

आश्चर्य की बात यह है कि मिथिलांचल की कला-संस्कृति में लोकनाट्यों, लोकगाथाओं और चित्रकला पर कई शोध हुए, लेकिन उनमें दलित अभिव्यक्ति पर सबसे कम ध्यान दिया गया। 80 के दशक के उत्तरार्ध में जब बिहार में जातीय राजनीति गरमाती है, तब उस पर थोड़ा बहुत ध्यान दिया जाता है। नाम नहीं लिखने की शर्त पर मिथिलांचल के कई लोककलाकारों ने इसका पूरा श्रेय बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद को दिया। कलाकारों के मुताबिक आज अगर दलित समाज के लोग अपना पूरा नाम ले पाते हैं तो यह लालू प्रसाद की ही देन है। लेकिन, वो इस बात से भी इनकार नहीं करते कि लालू प्रसाद के दौर में भी दलित लोककलाकारों के हित में कोई खास काम नहीं हुआ। यहां तक कि उनकी भूमिका महज विदुषकी तक सिमट गई।

बहरहाल, आज स्थिति यह है कि बिहार में दलित लोककलाकारों की संख्या तेजी से सिमट रही है और लोककलाकार अपनी आजीविका कमाने के लिए कलाकर्म का त्याग कर रहे हैं। ऐसे कलाकारों तक पहुंचना और उनका डाटा तैयार करना एक चुनौतीभरा काम है। मिथिलांचल के सुदूर गांवों तक लोककलाकार बिखरे हुए हैं। सुदूर गांवों तक पहुंचने का कोई साधन नहीं है। दम तोड़ती हालत में गांवों को जोड़ने वाली सड़कें हैं, कहीं

कच्ची कहीं पक्की तो कहीं खरंजे वाली। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि आपको उनपर आवागमन के साधन भी मिल जाएंगे। शाम से बाद तो स्थिति और विकट हो जाती है। शाम के बाद गांवों तक सफर इस आशंका से ग्रस्त रहता है कि कहीं कोई अनहोनी न हो जाए। यह आशंका बेमायने नहीं है क्योंकि कोशी नदी या कमला नदी के किनारे-किनारे दो कोस पैदल चलना उजाले में भी आसान नहीं है, लेकिन सांझ ढलने के बाद तो नामुमकिन हो जाता है, खासतौर पर तब जब बाहरी हों और उस इलाके से अनजान हो।

अगर आप किसी गांव में पहुंच भी जाते हैं तो एक दूसरे सच से सामना होता है और वह सच यह है कि या तो सलहेस लोककलाकार की पूरी टीम ही विखंडित हो गई या कोई अगर बचा है तो वह अपनी आजीविका कमाने हेतु पंजाब-हरियाणा में खेतों की खाक छान रहा है।

1. मिथिलांचल से संक्षिप्त परिचय

इससे पहले कि मैं राजा सलहेस और मिथिलांचल के संबंधों की बात करूं, सबसे पहले मिथिलांचल की सांस्कृतिक जानकारी देना आवश्यक है। उतर में नेपाल की तराई से लेकर भारत के राज्य बिहार में कोशी गंडक क्षेत्र से लेकर गंगा के उत्तर तटीय क्षेत्र का संपूर्ण इलाका मिथिलांचल कहलाता है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में मिथिला को विदेह की राजधानी बताया गया है। बाल्मिकी रामायण, महाभारत, शतपथ ब्राह्मण, स्कंद पुराण, भागवत जैसे संस्कृत ग्रंथों में मिथिला की चर्चा तो मिलती ही है, बौद्ध जातकों और जौन साहित्य में भी विदेह और मिथिला की विशद चर्चा हुई है।

विष्णुपुराण में संपूर्ण मिथिलांचल को 'तीरभुक्ति ख्यात देवा:' कहा गया है। तीरभुक्ति गुप्त राजाओं की प्रशासनिक इकाई थी, जिसकी पहचान तिरहुत प्रमंण्डल के रूप में की गयी है। वृहदविष्णुपुराण में मिथिला की चौहद्दी की चर्चा मिलती है जिसके मुताबिक यह प्रदेश उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में गंगा तक और पूर्व में कौशिकी से लेकर पश्चिम में गण्डकी तक फैला था। 'मिथिला भाषा रामायण' से लेकर मैथिली लोकगाथा 'लोरिक' तक तमाम महाकाव्यों, ग्रंथों और गाथओं इस दिग्देश की कला-साहित्य-सांस्कृतिक विविधता का विर्णन मिलता है। मिथिलांचल की इसी विविधतापूर्ण कलात्मक विविधता से यहां के समाज को लोक चेतना मिलती है जिसमें वैदिक परंपरा के तमाम गुण-दोष मिलते हैं और उन गुण-दोषों को व्यक्त करने की सामाजिक चेतना भी मिलती है।

सदियों से चली आ रही अपनी लोक परंपराओं और अपनी कला संस्कृति को थाती समान सहेजने समेटने के कारण कला और साहित्य जगत में यह क्षेत्र अत्यंत उर्वर रहा है, लेकिन साथ-ही-साथ उसके मूल्यांकन को लेकर उतना ही उपेक्षित भी रहा है। मिथिलांचल में कला और साहित्य की परंपरा अन्य प्रदेशों या क्षेत्रों की तुलना में बहुत भिन्न नहीं है। अन्य

प्रदेशों की तरह ही यहां की कला और साहित्य परंपरा में दो तत्व मुखर दिखते हैं। एक, अभिजात्यवर्ग की कला-साहित्य चेतना, जिसमें आपको असंख्य लिखित ग्रंथ उपलब्ध है और दूसरा, दलित और शूद्रों की कला-साहित्यिक चेतना, जिसपर अनुशंधान और अनुशीलन अभी तक न के बराबर हुआ है और अभी बाकी है। इस समाज की कला-साहित्य चेतना मुख्य रूप से मौखिक परंपरा पर आधारित है, दलित लोक चित्रकला को छोड़कर।

मिथिला चित्रकला में दलितों के प्रभाव का असर न सिर्फ राष्ट्रीय स्तर पर देखा जा सकता है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी उसकी ख्याति है। चानो देवी, बौआ देवी समेत तमाम दलित लोकचित्रकारों के चित्रों के अध्ययन से यह बात साबित होती है कि मिथिला के अभिजात्य समाज के चित्रों की तरह ही उनकी चित्रकला पारंपरिक और अनगढ़ है, लेकिन उसमें प्रतीकात्मकता का भाव समकालिक हैं और उनके संदर्भ सुनिश्चित, जो समान रूप से अपने अपने समाज की धार्मिक-सामाजिक भावनाओं के संप्रेषण में सक्षम है।

2. मिथिलांचल के लोकदेवता

मिथिलांचल में लगभग हर जाति के अपने लोकदेवता है और उनसे जुड़ी समाज की अपनी श्रद्‌धा है, धारणाएं है और महत्ताएं हैं। इनके जरिए संबंधित समाज अपने लिए रोग-शोक और दुख-दारिद्रय दूर करने एवं सुख-समृद्‌धि की बात करता है। इन लोक देवताओं में बरहम बाबा, बन्नी माई, कारिख, गहिल, अमर सिंह, केवल सिंह, बख्तावर भूईंया या बसावन बाबा आदि महत्वपूर्ण हैं। लेकिन इन देवताओं ने मिथिलांचल के समाज और वहां की कला संस्कृति में वह महत्वपूर्ण स्थान हासिल नहीं किया जो दुसाधों और पासवानों के कुलदेवता राजा सलहेस ने हासिल किया है।

राजा सलहेस एक तरह से दलित लोककला और संस्कृति के सर्वमान्य वाहक और रक्षक बन गए है। यही कारण है कि सलहेस केवल लोकदेवता न रहकर दलित समाज की लोकआस्था और संस्कृति के महत्वपूर्ण केंद्र भी है जिसके जरिए दलित लोककलाकार अपनी कला में परंपरा के साथ साथ आधुनिकता की बात करते हैं और उनमें चल रहे नये प्रयोगों की भी, खासकर चित्रकला में।

दलित चित्रकारों की चित्रकला में प्रतीकात्मकता ज्यादातर उनके लोकदेवताओं के रूप में मुखर होती है। इसमें राजा सलहेस सर्वप्रमुख हैं। राजा सलहेस परमवीर है, न्यायप्रिय हैं, दयालु हैं और संत हैं। राजा सलहेस को भी अन्य लोकदेवताओं की तरह उनके व्यक्तित्व से जुड़ी, लोककल्याणकारी कथाओं की वजह से ही देवत्व मिला है। जन-जन ने उन्हें लोकदेव बनाया है इसकी एक वजह यह भी है कि सलहेस ब्राह्मणवादी व्यवस्थाओं में दलितों और पतितों के लिए मान-सम्मान अर्जन की बात करते हैं, उसकी रक्षा की बात करते हैं। शायद यही वजह है कि सलहेस से जुड़ी कथाएं महज कथाएं नहीं रह गयीं, बल्कि शनैः शनैः महागाथा बनती गयी और मौखिक परंपरा के तहत ही सही, अपने

लोककल्याणाकारी उद्येश्यों के साथ आज भी गद्य-पद्य मिश्रित लोक महागाथा के रूप में प्रचलित है।

वैसे मिथिलांचल में राजा सलहेस के अलावा भी कई लोकगाथाएं प्रचलित और प्रसिद्ध हैं। जैसे: लोरिक मनियार (अहीर), नैका बनिजारा (तेली), कारिख पंजियार, फेकुराम दयाराम (हलुआई), दुलरा दयाल (मल्लाह), लालबन बाबा (चमार), गनीनाथ-गोविंद (कानू), गरीबन भुइंया, मोती दाई (धोबी), महकार (कोइरी), रइया रणपाल (पाल क्षत्रिय), विजयमल (मल्लवंशी क्षत्रिय), श्याम सिंह (डोम), बेनी राम (हजाम और कुरेड़ी), ससिया महाराज (चौपाल) आदि। इनमें राजा सलहेस की लोक महागाथा क्यों आज भी सबसे ज्यादा जीवंत है और मुखरित है, उसकी कई वजह हैं। पहली वजह तो यही है कि इस कथा में लौकिकता और पारलौकिकता के तत्व उतने ही प्रबल हैं जितने किसी संस्कृत महाकाव्य में या रामायण और महाभारत में।

दूसरी बात, यह उन दलितों-वंचितों के सामाजिक उत्थान की महागाथा है, जिन्हें सामाजिक अनुक्रम में सबसे नीचे स्थान प्राप्त था। जाहिर है, रामायण, महाभारत या किसी संस्कृत महाकाव्य के समतुल्य अपनी एक महागाथा विकसित कर खुद को संबल देने की कोशिश इस महागाथा में देखी जा सकती है और इसी वजह से इस महागाथा में अन्य रसों के साथ वीर रस की प्रधानता मिलती है। इतना ही नहीं, कथा का विषयवस्तु और उसका विस्तार तत्कालीन समाज की राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक व्यवस्था की भी झलक देता है जो बहुत हद तक ब्राहमणवादी व्यवस्थाओं को चुनौती देते मिलता है, चाहे वह चातुर्य का विषय हो या दंड विधान का, महिलाओं की सामाजिक स्थिति का।

3. लोकदेवता राजा सलहेस

संपूर्ण मिथिलांचल समेत पूरे बिहार में अनेक ऐसे जातीय नायक हैं जिन्होंने अपनी लोककल्याणकारी छवि की वजह से जन ने लोकदेवता का स्थान दे दिया है। ये जातीय विषेश के लिए पूज्य हैं, लेकिन उनके व्यक्तित्व का विस्तार उस उच्च स्तर पर हैं जहां वो सिर्फ किसी एक जाति विशेष के न होकर, अन्य जातियों के लिए स्वीकृत और पूज्य हो जाते हैं। ऐसे ही एक लोकदेवता है राजा सलहेस, जिन्हें राजाजी, बीर राजाजी, भगत एवं अन्य नामों से संबोधित किया जाता है।

3.1 राजा सलहेस का गहवर

मिथिलांचल में ऐसी मान्यता है, विशेषकर दुसाधों और पासवानों में, कि राजा सलहेस दैवीय गुणों से संपन्न एक अलौकिक पुरुष थे। उनके लिए वो जाग्रत देवता हैं जिसकी पूजा अर्चना और सुमिरन से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। इसी कारण आम तौर पर सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को उनकी पूजा वैदिक रीति से मंत्रोच्चार के साथ पूर्ण विधि-विधान से सपरिवार उनके गहवर में की जाती है।

गहवर यानी पवित्र घर या स्थान। मिथिलांचल और गंगा पार के इलाकों में विशेषकर पासवान और दुसाध टोलों के बाहर पीपल या बट वृक्ष के तले या तालाब किनारे राजा सलहेस का गहवर बना होता है। गहवर वास्तर में गहबर का अपभ्रंश है जिसे पहले गरूहर कहा जाता था। गहवर अक्सर मिट्टी या फूस का बना होता है लेकिन अब कई जगहों पर बकायदा ईंट पत्थर और कंक्रीट से मंदिर बना दिए गये हैं। आमतौर पर गहवर में राजा सलहेस, उनके भाई, चूहड़मल, कुसमा-मालिन और पहरेदार की मिट्टी की प्रतिमाएं स्थापित होती है। वैसे दरभंगा और मधुबनी में अब कई जगहों पर उनकी कंक्रीट से बनी मूर्तियां देखी जा सकती हैं।

3.2 गहवर की आंतरिक व्यवस्था

दरभंगा, मधुबनी समेत संपूर्ण मिथिलांचल में राजा सलहेस के गहवर के भीतर राजा सलहेस की मूर्ति को प्रमुखता से उभारा गया है जो एक हाथी पर सजे हुए हौदे में बैठे है या कहीं-कहीं घोड़े पर सवार हैं। जिस हाथी पर सलहेस बैठे हैं उसका नाम भौरानंद है। हाथी के कंधे पर मंगला महावत हाथ में बर्छी लिए हुए दिखाया गया है। सलहेस हौदे में कहीं-कहीं अकेले बैठे हैं तो कहीं-कहीं अपने भाई मोतीराम या बुधेसर के साथ या फिर अपने भतीजे करिकन्हा के साथ। जिन गहवरों में राजा सलहेस को अकेले भौरानंद हाथी पर बैठे दिखाया गया है, उनके दायें भाग में भाग भाई मोतीराम और बांये भाग में भाई बुधेसर को घोड़े पर सवार दिखाया गया है। राजा सलहेस के ठीक सामने हाथी के एकाध फुट की दूरी पर पूजा के समय एक मिट्टी का लोंदा पट्टी स्वरूप अक्षत पुष्प से अलंकृत मिलता है, जो देवी दुर्गा का प्रतीक है। देवी के प्रतीक चिन्ह के पास ही ज्यादातर जगहों पर उनके प्रतिद्वंदी चूहड़मल की प्रतिमा स्थापित होती है। अनदिने में यह सिर्फ मिट्टी का एक लोंदा भर दिखाई पड़ता है।

राजा सलहेस की मूर्ति के पार्श्व में एक बाघ की मूर्ति होती है। सलहेस के साथ गहवर में बाघ को स्थान कैसे मिला, इस बारे में जनश्रुति है कि एक बार राजा सलहेस ने एक शिकारी की जाल में फंसे ठनका बाघ को मुक्त कराया था। इसके बाद उस ठनका बाघ और राजा सलहेस में मित्रता हो गयी और वह किसी भी स्थिति में राजा सलहेस की मदद के लिए तत्पर रहता था। उसकी इसी निष्ठा की वजह से सलहेस के गहवर में उसे स्थान प्राप्त हुआ। ठनका बाघ के अलावा जिन अन्य जानवरों के सलहेस के गहवर में स्थान मिला है उनमें बंका भालू और बनचर कुत्ता प्रमुख है।

राजा सलहेस के दोनों तरफ डाली में फूल लिए दौना मालिन या कुसुमा मालिन खड़ी रहती है। उनके बगल में सलहेस के अंगरक्षक जिन्हें किरात

के रूप में स्थापित किया जाता है, हाथ में तलवार या बंदूक लिये स्थापित किये गये हैं। जानकारी स्वरूप गहवरों में बंदूकधारी अंगरक्षक की प्रधानता मिलती हैं। राजा सलहेस का गहवर अक्सर छोटी-छोटी मिट्टी की प्रतिमाओं जिसमें ज्यादातर घोड़े और हाथी होते हैं, से सुसज्जित होता है। ये हाथी घोड़े किसी विशेष इच्छा की पूर्ति के लिए मनता माने जाने या मनौती के प्रतीक चिन्ह हैं।

3.3 गहबरों में पूजा-अर्चना

दुसाध जाति के होने के कारण राजा सलहेस को मुख्य रूप से दुसाधों का कुल देवता माना जाता है, लेकिन पासवान समुदाय के लोग भी राजा सलहेस की पूजा अर्चना अपने कुल देवता स्वरूप ही करते हैं। राजा सलहेस के गहवरों में नित्य दिन पूजा अर्चना का विधान नहीं है, हालांकि जिस व्यक्ति पर गहवर की साफ-सफाई का जिम्मा होता है, वही सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को गहवर में साफ-सफाई के बाद धूप-अगरबत्ती से सलहेस की सामान्य पूजा करता है। वैसे राजा सलहेस के गहवर में दुसाधों और पासवानों द्वारा सामूहिक पूजा साल में कम से कम एक बार, मुख्य रूप से बैसाख, आषाढ़ या सावन के महीने में शुभ मुहूर्त देखकर की जाती है। मिथिलांचल में इसके लिए आषाढ़ के महीने को सबसे उपयुक्त माना गया है। यह पूजा कम से कम दो दिन और ज्यादा से ज्यादा सात दिन तक चलती है। पूजा की अवधि दो दिन होगी या सात दिन यह इस बात पर निर्भर करता है जजमान या आयोजनकर्ता के खर्च करने की क्षमता क्या है। आमतौर पर जब कोई व्यक्ति राजा सलहेस की पूजा करवाता है तब वह दो से तीन दिन तक होता है और सावन के महीने में या दशहरा, दुर्गा-पूजा के दौरान सलहेस के गहवरों में सात दिन की पूजा होती है।

3.4 पूजा-अर्चना की विधि

राजा सलहेस की पूजा अर्चना से पूर्व जजमान या आयोजनकर्ता सबसे पहले किसी भगत को नोतन (न्योता या निमंत्रण) भेजता है। भगत तय तिथि और निश्चित समय के अनुसार अपने समाजियों और मंडली के साथ नियत स्थान पर उपस्थित होता है। भगत के समाजियों में गितहर (गीत गाने वाला), डलिबाह (डालियां संभालने वाला), झलैत (झाल बजाने वाला) और मनरिया (मांदल या मृदंग बजाने वाला) शामिल होते हैं।

3.4.1 पूजा स्थल की तैयारी

पूजा से पूर्व गहवर के चारो ओर काफी साफ-सफाई की जाती है और फिर पूजा स्थल को आमतौर पर गाय के गोबर और चिकनी मिट्टी से सात बार लीपा जाता है। सात बार ही लीपा जाएगा, यह तय नहीं है। स्थान विशेष के हिसाब से इसकी संख्या घटती-बढती रहती है। पूजा स्थल पर भगत वेदी बनाता है और केले के थम्भों और पत्तों से बेदी की साज-सज्जा करता है। इसके पश्चात् वेदी के इर्द-गिर्द पूजन सामग्री जमायी जाती है जिसमें कई तरह के फूल शामिल होते हैं। जैसे अड़हुल, कनौत, चंपा, बेला, चमेली, गुलाब, फूलकोका, कुमुदनी, आदि। इनके अलावा धूप-अगरबत्ती, तुलसी का पत्ता, गांजा, पीनी-तम्बाकू, खैनी, पान-सुपाड़ी, अरबा चावल, जनेउ और नैवेद्य-सामग्रियां आदि को सुसज्जित करके रखा जाता है। पूजा स्थल के पास ही लाठी या बेंत भी रखा जाता है।

3.4.2 भगत का अपना रूप-अलंकार

पूजा के समय भगत प्राय: अर्धनग्न अवस्था में रहता है। स्नान के पश्चात् वह अधोवस्त्र के रूप में जांघिया के ऊपर लाल रंग का कछौटा या लंगोट पहनता है या लंगोट के ऊपर लाल रंग का जाघिया। यह उसकी उपलब्धता पर निर्भर करता है। वह कमर में घुंघरूओं का एक पट्टा बांधता है जिसे चन्नर कहा जाता है। कहीं कहें चन्नर में कौड़ियों के बंधे होने की बात भी मिथिलांचल में सुनाई पड़ती है। वह अपने सिर पर और

गले में कनैत और अड़हुल की माला धारण करता है। पूजा से पूर्व भगत अपने पूरे शरीर पर मिट्टी का लेप लगाता है और अपने ललाट पर सिंदूर का लंबा टीका लगाता है। भगत की हाथ में सिर्फ एक बेंत होता है। भगत के समाजी आमतौर पर घुटने तक पीली या सफेद धोती पहनते हैं और अंग वस्त्र के रूप में कमीज और गले में एक गमछा लटकाये रहते हैं।

इस भाव भंगिमा के साथ भगत पूजा-अर्चना करता है। लेकिन, संपूर्ण मिथिलांचल में भगत और उसके समाजियों के लिए उपरोक्त भावभंगिमा का धारण करना अनिवार्य नहीं है। अलग-अलग जगहों पर भगतों और उसके समाजियों के अलग-अलग अलंकरण हैं।

3.4.3 राजा सलहेस की 'गोहार'

गोहार (गुहार) का शाब्दिक अर्थ है जोर से बुलाना या पुकारना। राजा सलहेस की पूजा के दौरान भगत बार-बार तेज आवाज में अपने ऊपर सलहेस का आह्वान करता है और सलहेस के व्यक्तित्व-सा आचरण करता है। इस दौरान भगत के समाजी (डलिबाह, झलैत और मनरिया) तेज आवाज में सलहेस के अह्वान का गीत गाते हैं। इसे ही राजा सलहेस की गोहार कहा जाता है।

राजा सलहेस की पूजा में गोहार सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। स्नानादि के तत्पश्चात भगत पूरी भाव भंगिमा के साथ अपने समाजियों के साथ राजा सलहेस की विधिवत पूजा अर्चना करता है जिसे पूजा चढ़ाना या पूजा ढ़ारना कहते हैं। इसी समय चारों दिशाओं एक स्थान विशेष पर बांधने के लिए अनेक देवी देवताओं का सुमिरन गीत गाया जाता है। दिशाओं की सीमाओं को बांधने वाले गीतों को बंधन गीत भी कहते हैं।

सुमिरन और बंधन गीत के बात भगत भाव की मुद्रा में आ जाता है और उसके भाव की आरंभिक मुद्रा इस तरह की होती है कि वह ठेहुनिया बैठकर अपने दोनों हाथ से बेंत को क्षैतिक रूप में पकड़ता है और धरती से अपने मस्तक को सटाकर कुछ मंत्र बेहद धीमे स्वर पर पढ़ता है। इस भाव से बाहर निकलने से पूर्व उसकी मुद्राएं समान रहती है और वह इस भाव से बाहर निकलना चाहता है तो उसके पूर्व वह अपनी छड़ी को क्षैतित नहीं, लंबवत रखकर धरती को प्रणाम करता है। इसके पश्चात भगत सभी पूजन सामग्रियों को वेदी पर अर्पित करके सूर्य को प्रणाम करता है और अपने दोनों हाथों को ऊपर करके या दाहिने हाथ को ऊपर करके जिसमें बेंत की छड़ी होती है, गहवर और बेदी की परिक्रमा करने लगता है। इस दौरान वह कई तरह का भाव भी दिखाता है। जैसे कभी तेज गति से परिक्रमा करना, कभी अचानक ठिठक जाना, कभी सलहेस जैसा आचरण करना, तो कभी पूरे शरीर को अकड़ लेना, कभी गवहर में छिप जाना तो कभी भूत, वर्तमान और भविष्य की बातें करने लगना, कहीं सलहेस से संवाद करना तो कहीं दौड़कर नृत्य करने लगना। इस क्रम में भगत के अन्य समाजी ढोल, झाल, मृदंग और करताल बजाते हुए संगत करते हैं और सलहेस के आह्वान के लिए गीत गाते रहते हैं। इसी तरीके से यह पूजा दो दिन से लेकर सात दिन तक चलती है। इस दौरान अक्सर राजा सलहेस नाच का आयोजन किया जाता है और गायन वादन भी चलता रहता है।

पूजा के अंतिम दिन ऐसे लोग भी भगतई और उसके भाव को देखने आते हैं जो अपने दुखों और कष्टों से मुक्ति चाहते हैं, अपनी पीड़ा और विपत्ति से छुटकारा पाना चाहते हैं। ऐसे लोगों को 'कारिनी' या 'गोहरिया' कहा जाता है। कारिनी पूजा ढ़ारने से पहले पूजा की डाली लगाकर 'सलामी' रखते हैं। उसके बाद भगत उन लोगों के हाथ में अक्षत और फूल देता है और उन्हें बारी-बारी से बुलाकर उनकी समस्याएं सुनता है, उनकी समस्याओं का निदान बताता है। भगत कारिनियों से यह वादा भी लेता है कि उनके कष्टों के निवारण के बाद वह राजा सलहेस की पूजा

करवाएगा। इसके बाद भगत कारिनी का माथा ठोंककर या उसकी पीठ ठोंककर उसे आशीर्वाद देता है, वह किसी की कान में तो किसी की शरीर पर फूंक मारकर भी आशीर्वाद देता है।

3.4.4 'बामरि' लेने की प्रथा

मिथिलांचल में सलहेस पूजन के साथ बामरि लेने की भी प्रथा है। बामरि प्राय: स्त्रियां लेती हैं। सलहेस पूजन की समाप्ति के पश्चात् अपने दुखों और कष्टों के निवारण के लिए स्त्रियां बामरि लेती हैं। इसमें ढक्कननुमा मिट्‌टी के एक नये पात्र में रूई की बत्ती को कपूर या घी के सहारे जलाया जाता है और फिर उसमें धूमन की गर्दी झोंकने से आग की एक लपट उठती है। इस लपट को भगत उस महिला से शरीर से स्पर्श कराता है जो बामरि लेना चाहती है।

पूजा भाव और कारिनी-बामरि के बाद राजा सलहेस की पूजा समाप्त हो जाती है और भगत अपनी स्वभाविक मुद्रा में आ जाता है। इसे देवता का पार पाना भी कहते हैं।

यहां एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि आमतौर पर राजा सलहेस की पूजा-अर्चना दुसाध और पासवान करते हैं, लेकिन अपनी मनौती पूरी होने के पश्चात् सलहेस के गहवरों में अन्य जाति के लोग भी पूरी श्रद्‌धा से सलहेस की पूजा करते हैं। मिथिलांचल में कई स्थानों पर ऐसा भी देखा गया है कि अगड़ी जाति या अन्य जाति की महिला या पूरुष भी राजा सलहेस की पूजा करते हैं और मनौती मानते हैं। जिस व्यक्ति की मनौती फलित होती है, वह राजा सलहेस की पूजा धूमधाम से करता है, फल-फूल और प्रसाद श्रद्‌धापूर्वक चढ़ाता है और अपने लिए मंगलकामना करता है।

4. राजा सलहेस की लोककथा

जिस प्रकार राजा सलहेस की ऐतिहासिकता को खोज पाना अभी तक संभव नहीं हुआ है, उसी तरह राजा सलहेस की लोककथा की शुरुआत कब हुई और उसका मूल रूप क्या है, इसका बारे में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। लेकिन, राजा सलहेस लोकगाथा का पहला मुद्रित रूप 1881 में लिखित जार्ज ए. ग्रियर्सन की पुस्तक 'मैथिली क्रेस्टोमैथी एण्ड वॉकेबुलरी' में मिलता है। लेकिन ग्रियर्सन द्वारा लिखित पाठ संपूर्ण है, ऐसा इसलिए नहीं कहा जा सकता है क्योंकि इसमें राजा सलहेस लोक महागाथा के उस खंड को संजोया गया है जो लोकप्रियता के लिहाज से मिथिलांचल में शिखर पर है। ग्रियर्सन ने जो पाठ मुद्रित करवाया वह सलहेस और चुहड़मल प्रसंग का है जिसमें दौना मालिन भीमसेन राज में चोरी के आरोप में पकड़े गए सलहेस को अपने योगबल से मुक्त कराती है और असली चोर चूहड़मल को भीमसेन के सामने प्रस्तुत करती है। ततपश्चत वह पकड़िया से विदा लेती है।

ग्रियर्सन के बाद डॉ. पूर्णानंद दास ने सलहेस गाथा का संपूर्ण पाठ लिखा जिसे उन्होंने 1962 में लोकगायक फूलचंद दास से सुना था। अपने शोध में ग्रियर्सन और फूलचंद दास के पाठों की तुलना की और लिखा कि "गाथा का वर्तमान स्वरूप ग्रियर्सन द्वारा संकलित पाठ से आकार में बढ़ा है। अस्सी वर्ष की अवधि में गाथा गायकों ने घटनाओं के अलावा आकार में भी परिवर्तन किया है। ग्रियर्सन का पाठ सुखान्त है तो वर्तमान पाठ दुखान्त। पहले पाठ में गाथानायक का गुणगान प्रधान है जबकि आधुनिक पाठ में गाथानायक जातीय देवता बन जाते हैं और संभवत: सलहेस को देवत्वमंडित करने के लिए उनसे अलौकिक कार्य भी कराये गये हैं"।

सलहेस लोकगाथा पर एक वृहद पाठ 2007 में 'सलहेस लोकगाथा' नाम से छपा। डॉ महेंद्र नारायण राम और डॉ फूलो पासवान के संपादन में लिखी गयी यह पुस्तक सलहेस पर विस्तृत जानकारी देती है और सलहेस

से जुड़े सर्वाधिक प्रसंगों की जानकारी देती है। सलहेस पर अन्य पुस्तकें भी छपी है, लेकिन सवाल यह है कि क्या उसमें लोकपाठ का अनगढ़ स्वरूप भी है और क्या उसमें संबंधित समुदाय के लोकचित्त का सही-सही चित्रण किया गया है। इस बारे में जब मिथिलांचल में आज के दो महत्वपूर्ण गायकों से जब बात की गयी तब पता चला कि आजतक किसी भी लेखक को उनसे सलहेस की संपूर्ण गाथा नहीं सुनायी। यानी सबने अपनी-अपनी सुविधा से पाठ को लिखा है, जाहिर है, इसमें कोई बड़ा शोधार्थी है तो किसी ने पीएचडी की उपाधि ली है। उनके निजी विचार या उनकी अपनी सर्जनात्मक शैली पाठों से साथ नहीं जुड़ी हुई हो, यह कह पाना कठिन है।

ऐसे में जरूरत इस बात की भी है कि जो भी पाठ मूल रूप में गांव देहातों के आखर-अनपढ़ गुरुओं के पास उपलब्ध है उसे संजोया जाए। इसके लिए अभी तक तीन नाम सामने आए हैं। पहला, बिसुनदेव पासवान, जो मधुबनी के चिकना गांव में रहते हैं और उनके गायन का कुछ अंश इस रिपोर्ट के साथ संलग्न है। दूसरा नाम आता है मधुबनी के ही हरलाखी गांव में रहने वाले गंगाराम का, जिनसे संपर्क साधने की कई कोशिश विफल हुई क्योंकि वो उस समय गांव में उपलब्ध नहीं थे और तीसरा नाम है मोहन पासवान का जिसे दरभंगा के सलहेस कलाकार अपना गुरु मानते हैं।

बहरहाल, संपूर्ण मिथिलांचल में राजा सलहेस लोकगाथा का दो पाठ सर्वाधिक चर्चित है और थोड़े-बहुत बदलाव के साथ आज गाथा गायकों के मुख से सुनाई पड़ता है। वो दोनों पाठ नीचे लिखे गये हैं। यहां यह ध्यान देने योग्य बात है कि इसमें गंगा पार इलाके का पाठ शामिल नहीं है जहां चोर चुहड़मल को सलहेस की तरह नायक के तौर पर स्थापित किया गया है और उसकी महत्ता सलहेस के समानांन्तर है।

4.1.1 लोककथा पाठ: एक

नेपाल की तराई में स्थित महिसौथा गांव में दुसाध जाति के एक महात्मा थे। उनका नाम था वाक मुनि। वे 12 वर्ष की कठोर तपस्या में लीन थे। इसी दौरान इन्द्रलोक से मायावती नाम की एक अप्सरा फूल लोढ़ने के लिए महिसौथा आयी। फूल लोढ़ने के क्रम में उनकी नजर साधना में लीन वाक मुनि पर पड़ी और उनके सुंदर रूप को देखकर मोहित हो गयी। मायावती ने अपनी सुंदरता और कामरत हाव-भाव से वाक मुनि की तपस्या भंग कर दी। तपस्या भंग होने से क्रोधित वाकमुनि ने मायावती को श्राप दिया कि जिस प्रकार उसने उनकी तपस्या भंग की है, उसी तरह अब उसे इन्द्रपुरी में स्थान नहीं मिलेगा और उसे मृत्युलोक में भटकना पड़ेगा।

मुनि के श्राप को सुनकर मायावती अंतर्नाद करते हुए उनसे क्षमा याचना करने लगती है। मायावती की क्षमा याचना से द्रवित होकर वाक मुनि कहते हैं कि उनका शाप वापस तो नहीं हो सकता, लेकिन मृत्यु लोक में वह दिव्य शक्ति संपन्न तीन पुत्रों और एक पुत्री की माता बनेगी और गौरव प्राप्त करेगी। मुनि कहते हैं कि मृत्युलोक में वह मंदोदरी के नाम से जानी जाएगी। वह यह भी बताते हैं कि मंदोदरी को पहला महिसौथा के कमलदल तालाब में पुरईन के पत्ते पर मिलेगा और वह उसका नाम सलहेस रखे। बड़ा होकर वह दैवी शक्ति से संपन्न राजा बनेगा। उसका बड़ा नाम होगा। कलियुग में भी लोग उसकी पूजा करेंगे। इसके बाद दो पुत्रा और एक पुत्री पैदा होगी। मझले का नाम मोती राम और छोटे पुत्र का नाम बुधेसर रखेगी। उसकी बेटी बनसप्ती के नाम से जानी जाएगी। इतना कह कर मुनि अन्तघ्र्यान हो गये।

तत्पश्चात, इंद्रलोक की अप्सरा मायावती मृत्युलोक में मंदोदरी बनी। मंदोदरी को महिसौथा के कमलदल तालाब में पुरईन के पत्ते पर एक बच्चा मिला। यही बच्चा सलहेस हुए। काल-क्रम से मंदोदरी ने दो लड़के

और एक लड़की को जन्म दिया। मुनि के कथनानुसार मंझले का नाम मोती राम, छोटे का बुधेसर और लड़की का नाम बनसप्ती हुआ। इस तरह तीनों भाई ने मिलकर महिसौथागढ़ में अपना राज्य स्थापित कर लिया। बनसप्ती जादुगरनी बन गयी। कहा जाता है कि छः महीना आगे-पीछे वह जानती थी। बनसप्ती का प्रेम विवाह सतखोलिया के राजा शैनी से हुआ। इससे उसे एक पुत्रा पैदा हुआ जिसका नाम करिकन्हा रखा गया। वह स्वभाव से बड़ा ही उदंड था।

सलहेस जब 12 वर्ष के हुए तब मंदोदरी को उनके विवाह की चिंता होने लगी। तब तक सलहेस ने महिसौथा में अपना विशाल राज्य स्थापित कर लिया। चौदह कोस में उसके राज्य का विस्तार हो गया। सलहेस के विवाह के लिए योग्य लड़की की तलाश होने लगी। पंडित और नाई अनेक राज्यों में घूम-घूम कर योग्य कन्या की तलाश करने लगे लेकिन सलहेस के योग्य कोई लड़की नहीं मिली। आखिर में मंदोदरी ने पंडित और नाई को बुला कर कहा कि बराटपुर के राजा बराट की एक पुत्री है। बड़ी ही सुशील और संस्कारवाली। उसका नाम है सामरवती। जन्म लेते ही उसने प्रतिज्ञा कर रखी है कि वह यदि विवाह करेगी तो महिसौथा गढ़ के राजा सलहेस से नहीं तो आजन्म कुंवारी ही रहेगी। इसलिए राजा बराट को सलहेस के सामरमती से विवाह का संदेश दे दीजिए। राजा बराट को लिखा विवाह के इस प्रस्ताव का पत्रा लेकर चन्देसर नाम का नाई महिसौथा से बराटपुर के लिए प्रस्थान किया।

राजा बराट जाति से क्षत्रिय थे और स्वभाव से अत्यंत कठोर। नाई से विवाह संबंधी प्रस्ताव का पत्रा पढ़ते ही वह आग-बबूला हो गया और उसे जेल में डलवा दिया। इधर महिसौथा राज में चन्देसर हजाम के वापस नहीं आने से लोगों की चिंता बढ़ गयी। मोतीराम ने माता दुर्गा को स्मरण किया और सारी बातें उन्हें विस्तार से बता दिया। दुर्गा ने तुरंत प्रकट होकर मोती राम को बता दिया कि राजा बराट ने चन्देसर हजाम को कैद कर लिया है तथा यह भी कहा कि सलहेस का विवाह राजा बराट

की पुत्री सामरवती से ही लिखा है। यह होकर रहेगा। इतना सुनते ही मोती राम का गुस्सा आसमान पर चढ़ गया। उसने अपने भांजा करिकन्हा को बुलवाया और बराटपुर के लिये प्रस्थान किया। रास्ते में एक साथ सात सौ घसवाहिनियां मिलीं। ये सब के सब जादुगरनी थी। सबों ने मोतीराम को अपने जादू के बस से परेशान कर दिया। बाद में मोतीराम से उन्हें परास्त होना पड़ा। इस तरह मोतीराम अपने भांजे के साथ बराटपुर पहुंचे। राजा बराट उनकी शक्ति के सामने अपने को कमजोर समझ कर हथियार डाल दिये। चन्देसर नाई को रिहा कर दिया। राजा बराट ने विवाह की सहमति दे दी। बारात सजा कर लाने के लिए मोतीराम अपने भांजे के साथ वापस महिसौथा आ गये।

बीच का एक और घटनाक्रम इस लोकगाथा को विस्तार देता है। राजा हिनपति मोरंग के राजा थे। उनकी स्त्री थी दुखी मालिन। इस मालिन की कोख से रेशमा, कुसुमा, दौना, तरगेना और फूलवंती पांच बेटियां पैदा हुई थी। लोकगाथा में कहीं-कहीं सात बेटियों की चर्चा मिलती है जिसमें हिरिया, जिरिया, रेशमा, कुसमा, दौना, तरेगना और फूलवंती। इनमें सबसे बड़ी फूलवंती थी। जन्म के साथ ही फूलवंती ने सलहेस से विवाह करने का संकल्प लिया हुआ था। अब तक उसकी मुलाकात सलहेस से नहीं हुई थी। दुर्गा की आराधना के पश्चात् सभी बहनें सलहेस की तलाश में घर से निकल पड़ी। वे सब भी जादू जानती थी। सलहेस की तलाश करते हुए वे सभी महुरावन में आ गयी, जहां से मोती राम अपने भाई सलहेस की बारात सजा कर बराटपुर के लिए प्रस्थान करने वाला था। मोती राम ने सलहेस को भौरानंद हाथी पर सवार करा दिया और बारातियों को चेतावनी दे दी कि मोरंग की पांचों बहन मलिनिया भईया पर आंख लगाये हुए है इसलिए सावधान रहना। दिन रहते बारात बराटपुर पहुंच गई। दरवाजा लगाने के लिए उचित समय आने के इंतजार में सभी बाराती आराम करने लगे।

उधर महुरावन में पांचों मलिनिया सो रही थीं कि देवी दुर्गा ने उसे सपने में बता दिया कि जिस सलहेस से विवाह के निमित्त तुम प्रतिज्ञा किये हुए हो उसे मोतीराम राजा बराट की पुत्री से विवाह कराने के लिये ले जा रहा है। अगर बराट की पुत्री से सलहेस का विवाह हुआ, तो तुम्हारी मनोकामना पूर्ण नहीं होगी। यह सुनते ही पांचों बहन बराटपुर पहुंच गयीं जहां मोतीराम, करिकन्हा समेत सभी बाराती नींद में बेसुध थे। पांचों बहन ने जादू के बल पर सलहेस को सुग्गा बना दिया और पिंजड़ा में लेकर भाग चली।

इस बीच बारातियों की जब नींद खुली तो भौरानंद हाथी पर सलहेस को न पाकर तरह-तरह की चर्चा होने लगी। मोतीराम ने इस घटना को दुर्गा की करतूत मानते हुए घोड़े पर सवार होकर उनका पीछा करना शुरू कर दिया। उसने जब दुर्गा को स्मरण करते हुए अपने भाई के बारे में पूछा तो दुर्गा ने उसे बताया कि पांचों मलिनिया सलहेस को लेकर ठेंगटी गांव में पहुंच गयी है। मोतीराम जब वहां पहुंचा तो पांचों मलिनियां सलहेस को खीर बनाकर बरगद के घोंघड़ में रख कर स्वयं नटिन का रूप धरण कर एक जगह बैठ गयी। मोतीराम ने जब सलहेस के बारे में पूछा तो पांचों बहनों ने अपनी अनभिज्ञता जतायी। इसके बाद उसका उग्र रूप देख कर मार-पीट के डर से सलहेस को उसके असली रूप में लाकर उसके हवाले कर दिया। इसके बाद मोतीराम सलहेस के साथ बराटपुर आये और राजा बराट की पुत्री से उसका विवाह हुआ।

विवाह की रात में कोहबर घर से फिर पांचों मलिनियां जादू के बल पर सलहेस को चुरा ले गयी। अंत में सामरवती ने यह विश्वास दिला कर उनसे सलहेस को मांग लिया कि जैसे ये हमारे पति हैं वैसे तुम्हारे भी पति हैं। मायके से ससुराल महिसौथा जाने के तुरंत बाद मैं अपने स्वामी को तुम्हारे पास मोरंग भेज दूंगी। सामरवती के ऐसा विश्वास दिलाने के बाद पांचों बहनों ने सलहेस को असली रूप में सामरवती को वापस कर दिया और वे सब महिसौथा वापस आ गये। सलहेस के बाद मोतीराम और

बुधेसर का भी विवाह हुआ। सलहेस को जब सामरवती द्वारा पांचों बहन मालिन को दिये गये वचन के बारे में मालूम हुआ तो वह उत्तराखंड राज के राजा भीम सेन के यहां नौकरी करने चला गया।

इस बीच महिसौथा गढ़ में सलहेस की याद में उदासी छा गयी। एक दिन राजा भीम सेन के राज में नौकरी करते हुए फुर्सत के समय में सलहेस कदम्ब गाछ के नीचे बांसुरी बजा रहे थे कि पेड़ पर बैठा एक सुग्गा सीता-राम-सीता-राम करने लगा। वे उस सुग्गे को पहचान गये। वह महिसौथा का उनका प्यारा सुग्गा हिरामन था। वह पेड़ से उतर कर उनके पास आया और महिसौथा गढ़ का सारा हाल सुनाने लगा। कहा कि उनके वियोग में मां, भाई, सामरवती और महिसौथा गढ़ का बुरा हाल है। इतना सुनकर सलहेस वापस महिसौथा आ गये। इसके बाद बंगाल के तीसीपुर के क्षत्रिय राजा की बेटी कुसुमावती से मोतीराम और श्यामल गढ़ के राजा श्याम सिंह की पुत्री श्यामलवती से बुधेसर का विवाह होता है।

इस अन्तर्जातीय विवाह में संघर्ष, जादू-टोना और दाव-पेंच सलहेस लोक गाथा या नाच को रोमांचित भी करता है और उसे लोकप्रियता भी प्रदान करता है। सामंती समाज व्यवस्था में जातिगत आधार पर जो द्वन्द्व था वह इस लोक गाथा में स्पष्ट दृषिटगोचर होता है। यह लोक गाथा उस समय मोड़ लेती है जब सलहेस की पत्नी सामरवती पांचों बहन मलिनियां को दिये अपने वचन की याद दिलाते हुए स्वामी सलहेस से कहती है कि वह वचन पूरा करने के लिए उन्हें मोरंग जाकर उनसे मिलना चाहिए। वह कहती है कि जिस रात मेरे कोहबर से आप को चुरा लिया गया था उस दिन इसी शर्त पर मालिन से मैं आपको मांग लायी थी कि गौना के बाद मैं आपको उन्हें सौंप दूंगी। मैं वचन हार चुकी हूं। इसलिए आप वह वचन पूरा कीजिए। इसी बात पर सलहेस मोरंग के लिए प्रस्थान करते हैं। साथ में है वही हिरामन सुग्गा जो भूत-भविष्य सब जानता है। मोरंग पहुंच कर परबा पोखर पर वे लोग ठहर जाते हैं।

यहां देवी दुर्गा फिर एक बार करिश्मा करती है। पहर रात रहते दुर्गा भोर होने का आभास कराकर फूलवंती को पोखर में स्नान कराने के लिए भेज देती है। इधर हिरामन की सलाह पर सलहेस पोखर में भरपूर मात्रा में सिंदूर डाल कर एक किनारे बैठ जाते हैं। ज्योंही पफूलवंती पोखर में प्रवेश कर पानी छींटा मुंह पर देती है कि संपूर्ण माथा सिंदूर के रंग से लाल हो जाता है। इसके बाद तो हंगामा हो गया कि कोई छल से फूलवंती की मांग में सिंदूर डाल दिया। बात फूलवंती के पिता राजा हिनपति तक पहुंचती है। फूलवंती पंडित के भेष में बैठे सलहेस को नहीं पहचान पाती है। राजा के सिपाही सलहेस को गिरफ्तार कर जेल में डाल देते हैं।

यहां फिर देवी दुर्गा एकबार सहायक बनती है और सलहेस के मोरंग में गिरफ्तार होने की खबर महिसौथा गढ़ पहुंच जाती है। यहां से मोतीराम और भांजा करिकन्हा दोनों मोरंग पहुंचते हैं। पहले राजा हिनपति के पुत्र करण सिंह और मोतीराम के बीच युद्ध में करण सिंह मारे जाते हैं। अब बारी हिनपति की आती है तो फूलवंती बीच बचाव करते हुए मोतीराम से कहती है कि मैं मैं आपकी भाभी हूं। इस पर मोतीराम राजा हिनपति को जीवित छोड़ देते हैं। राजा हिनपति सलहेस को आजाद कर देते हैं। इसके बाद मोरंग की पांचो बहनें राजा सलहेस के दर्शन के लिए महिसौथा गढ़ आकर दुर्गा से आग्रह करती है कि वे उनका दर्शन किसी तरह करा दें। रेशमा, कुसमा, दौना, तरेगना और पफूलवंती पांचों बहनें यह संकल्प लेती है कि यदि उन्हें सलहेस के दर्शन नहीं हुए तो वे एक साथ विष खाकर जान दे देंगी। इस पर दुर्गा उन्हें मानिकदह पोखर पर आकर इंतजार करने को कह कर सलहेस को भी उस पोखर पर आने के लिए प्रेरित करती है। सुग्गा हिरामन यहां भी यह कहते हुए सलहेस को सावधान करता है कि वहां जाने पर जादुगरनी मालिनें आपको फिर सुग्गा बनाकर पिंजड़ा में कैद कर लेगी।

राजा सलहेस प्रतिदिन मानिकदह में स्नान कर वहां से फूल लाकर अपने इष्ट देवता की पूजा करते थे। सो इसमें किसी तरह का व्यतिक्रम करना

वह नहीं चाहते थे। इसलिए हिरामन की सलाह पर वे पंडित का भेष धरण कर मानिकदह पहुंच गये। वहां वे देखते हैं कि स्नान करने वाले सभी पांचों धर को पहले से मालिन युवतियां छेके हुए है। वे उनसे एक धर खाली कर देने का अनुरोध करते हैं। इस पर पंडित भेषधरी सलहेस से वे कहती हैं कि हम लोग सलहेस से मिलने की प्रतीक्षा में यहां बैठी हैं। इस पर सलहेस कहते हैं कि हम तो ब्राह्माण हैं। स्नान करके पूजा करने जाना है। इसलिए एक धर छोड़ दो। तुम्हारा सलहेस तो महिसौथा में बैठा हुआ है।

एक बार फिर पांचों बहन मालिन ठगी जाती है। दुर्गा को भला-बुरा कहने लगती है। इस पर दुर्गा भेद खोलते हुए कहती है कि वह जो पंडित था वही तुम्हारा सलहेस था। इसके बाद चन्द्रग्रहण के अवसर पर जब सलहेस मानिकदह में स्नान करने आते हैं तो वहां पहले से डेरा जमाये हुए पांचो बहनें गहरी नींद में सो रही थीं। दुर्गा ने उन्हें पहले ही बता दिया था कि चन्द्रग्रहण के अवसर पर तुम्हें निशिचत रूप से सलहेस से भेंट होगी। दुर्गा की कृपा से उन सबों की नींद टूटती है और उन्हें सलहेस के दर्शन हो जाते हैं। इन पांच बहनों का सलहेस से चिर प्रतिक्षित मिलन इस लोक गाथा का सर्वाधिक कारूणिक पक्ष माना जाता है।

मिलन के बाद जब पांचों बहनें यह कहती हैं कि आपसे विवाह की प्रतीक्षा में मैंने मां-बाप को छोड़ दिया। मोरंग में विवाह के लिए बने मंडप को ठुकराया, सखी-सहेलियों की बातें नहीं मानी और अपने पिता के घर को लात मार कर चली आयी। अब मेरा वयस भी बीत चुका है। बाल पक गये। दांत टूट चुके हैं। अब मेरी जिंदगी का क्या होगा? हमारा नाम कैसे चलेगा, अरे निर्मोही। मेरी आश तो पूरी कर दो। उनके इस कथन पर दिव्यशक्ति संपन्न सलहेस ने कहा-'यह सतयुग है। इसके बाद कलियुग आयेगा। हमारे साथ तुम्हारी भी पूजा घर-घर में होगी। मेरे दाहिने भाग में भाई मोतीराम और साथ में बुधेसर रहेगा। तुम हमारे बायें भाग में रहोगी और इसी रूप में लोग हमारी पूजा करेंगे। गहवर में हाथी पर सवार

राजा सलहेस की प्रतिमा के दोनों ओर पफूलों से भरी डाली हाथ में लिए जो मालिन खड़ी दिखाई देती है वह वही मालिन है। महिसौथा गढ़ से 6-7 मील दूर आज भी राजा सलहेस की फुलवाड़ी का अवशेष कायम है जहां जूड़-शीतल के अवसर पर विशाल मेले का आयोजन होता है।

4.1.2 लोककथा पाठ: दो

राजा सलहेस की लोककथा के कई पाठ मिथिलांचल में मिल जाएंगे, लेकिन जिन दो पाठों का लोकप्रियता शिखर पर है, उनमें से एक पाठ ऊपर लिखा गया है। इसका दूसरा पाठ आप नीचे पढ़ सकते हैं। मंचन और चित्रण के लिहाज से यह पाठ पहले पाठ की अपेक्षा ज्यादा लोकप्रिय भी है और इसमें नाटकीयता का भाव भी पहले पाठ के मुकाबले ज्यादा है।

इस पाठ के मुताबिक भी राजा सलहेस तीन भाई है और तीनों मंदोदरी को आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त होते हैं। राजा सलहेस, भाई मोतीराम और सबसे छोटा बुधेसर। मंदोदरी को एक बेटी भी होती है जिसका नाम बनसप्ती है। पहले पाठ और इस पाठ में राजा सलहेस और उनके भाई-बहन के जन्म को लेकर एक अन्य प्रकरण की चर्चा मिलती है। यहां सलहेस, मोतीराम, बुधेसर और बनसप्ती का जन्म मंदोदरी से नहीं होता है बल्कि ये सभी वाकमुनि और उनकी पत्नी माता महेश्वरी की संतान है जिनका जन्म ब्रह्मा विष्णु महेश और मां जगदंबा से वरदान स्वरूप मिले फल को खाने से होता है। राजा सलहेस अपनी वीरता और पराक्रम की वजह से मोरंग (नेपाल) से लेकर मिथिला तक प्रसिद्ध हैं।

तरेंगनागढ़ (मोरंग) के राजा महेश्वर भंडारी की सात बेटियां थीं। हिरिया, जिरिया, रेशमा, कुसमा, तरेंगनी, दौना और फूलवंती (गाथा के अलग-अलग पाठों में इनकी संख्या चार से लेकर सात तक मिलती है)। महेश्वर भंडारी की ये मालिन बेटियां राजा सलहेस पर आसक्त हैं और उनसे प्रेम करती हैं। ये तंत्र-मंत्र सिद्ध कर चुकी हैं और तंत्र-मंत्र के जरिए राजा सलहेस को पाने के लिए युक्तियां अपनाती रहती हैं। ये कभी सलहेस को सुआ बनाकर रख लेती है तो कभी स्वयं भ्रमरी बनकर मानिकदह सरोवर में सलहेस को स्नान करते समय पकड़ती हैं। प्रेम के इस खेल में सलहेस कभी यहां तो कभी वहां भागते रहते हैं-

खन-खन रहै छी हम बेलकागढ़ मे
खन-खन रहै छी सगर बाग मे
मानिकदह में स्नान करेत छी
गढ़ पोखरिया मे मैया सुमरैत छी
भागैछी, त एहि मलिनिया खातिर।

इस बीच परिस्थितिवश राजा सलहेस का विवाह बनाटपुर (कहीं-कहीं विराटनगर) के राजा की बेटी सत्यवती (अन्य नाम सतवर्ती, समरवती) से तय हो जाती है। सत्यवती भी सलहेस को चाहती है। बनाटपुर का3 राजकुमार अपनी बहन सत्यवती का विवाह अपने मित्र भुटानेश्वर के साथ करना चाहता था। यहां इस दुराभिसन्धि को विफल करने हेतु राजकुमार के विरोध के बावजूद सत्यवती का विवाह सलहेस के साथ निश्चित होता है। इस विवाह को रोकने के लिए मालिन बहनें सलहेस का अपहरण कर और सुआ (तोता) बनाकर रख लेती हैं। भाई मोतीराम के प्रयास से सलहेस मुक्त होते हैं और उल्लासपूर्वक विवाह संपन्न होता है।

विवाह से द्विरागमन यानी विदाई के बीच वाला समय भई कई प्रकार से संघर्षपूर्ण बना रहता है। बहुत उठापटक के बाद सत्यवती की विदाई होती है और सलहेस चैन से गृहस्थजीवन व्यतीत करते हुए ग्राम-गहवरों में दुखी-पीड़ित की फरियादें सुनते, उसका समाधान करते रहने की इच्छा व्यक्त करते हैं। अपेक्षाकृत इस शांत जीवन-स्थिति में एक दिन सलहेस की आराध्या देवी दुर्गा प्राय: जीवन के ठहराव से चिन्तित होकर उन्हें स्वप्न देती हैं। स्वप्न यह कि पकड़िया के राजा कुलेश्वर (कुछ पाठों में इसका नाम भीमसेन भी है) की फुलवारी सलहेस की फुलवारी से अच्छी है और सलहेस को वहां जाकर उसे देखना चाहिए।

उधर पकड़िया की राजकुमारी चंद्रावती को भी सपने में दुर्गा कहती हैं कि जिस पुरुष की कामना वह बारह बरस से कर रही है वह पुरुष (सलहेस)

कल उसकी फुलवारी में आ रहा है। वह उससे जाकर भेंट करे तथा अपना बनाकर मन की साध पूरी करे।

पकड़िया की बड़ी फुलवारी में घूमते-घूमते थककर सलहेस एक चगह छांह में विश्राम करते हुए सो जाते हैं। वहीं खोजती हुई चन्दावती पहुंचती है, तो दोनों में इस तरह का वार्तालाप होता है;

चंद्रावती: पलक तं खोलियौ राजा
नजरिसं देखियौ पियबा हे
छोटे जखन रहियै
त परन हम ठनलियै से
से दरसन देलियै हो पियबा
राज पकड़ियामे ने हो।

सलहेस: कथि लगि सत्त हे सुन्दरी
हमर भंगठबै छ
कथि लागि कुल में आई
दगिया लगबै छ
जइयौ त जइयौ हे सुन्दरी
अपन महलिया में
हमहू त जाइ छी सुन्दरी
अपना महलिया मे ने हो।

इस तरह चंद्रावती सलहेस से पत्नी के रूप में उसे स्वीकार करने का आग्राह करती है। विवाहित होने के कारण सलहेस चंद्रावती का विवाह-प्रस्ताव ठुकरा देते हैं। कई तरह की धमकियां देने पर भी सलहेस नहीं मानते तो चंद्रावती अपने राजा पिता से शिकायत करती है। शिकायत में आरोप यह कि फुलवारी में घूमते हुए इस चोर ने उसकी इज्जत लूटने का प्रयास किया।

शिकायत पर सिपाही सलहेस को पकड़कर राजा के आदेश से कारागार में डाल देते हैं। लेकिन सलहेस के प्रति भीतर से अत्यंत कोमल भाव रखने वाली चंद्रावती इस दंड से दुखी हो जाती है और दंड स्वरूप सलहेस को अपने महल की पहरेदारी में रखने का प्रस्ताव अपने पिता से मनवा लेती है, इस आशा से कि उसके महल की पहरेदारी में रहते हुए सलहेस को उससे निकटता बढ़ेगी, फिर संभव है कि वह विवाह के लिए भी राजी हो जाए।

इस तरह से सलहेस को चंद्रावती के महल की पहरेदारी तो मिल गयी, लेकिन पहले से ही इस परहेदारी के काम में प्रसन्नतापूर्वक लगे मोकामागढ़ का राजा चूहड़मल अत्यंत क्रोधित हो जाता है। वह पकड़िया के राजा कुलेश्वर से बदला लेने की प्रतिज्ञा करता है और उसे पूरी करने के लिए गंगा माता की शरण लेता है।

गंगा की प्रार्थना और चढ़ावे से आश्वासन से प्राप्त आशीर्वाद के बल पर चूहड़मल मोकामासे पकड़िया, फिर वहां राजकुमार चंद्रावती के शयन-कक्ष तक सेन्ह (सुरंग) खोदता है। सुरंग के माध्यम से शयन-कक्ष में पहुंचकर सोती हुई राजकुमार के सभी वस्त्राभूषण चुरा कर भाग जाता है। इस चोरी का आरोप लगता है सलहेस पर। सलहेस को कारागार में डालकर उसे नाना प्रकार से प्रताड़ित किया जाता है। इस तरह उत्पीड़ित सलहेस से चंद्रवती विवाह की बात मानकर कष्टों से मुक्त होने का प्रस्ताव एक बार फिर देती है। सलहेस फिर विवाह का प्रस्ताव अस्वीकार कर देते हैं।

सलहेस की इस दुखद स्थिति की सूचना उनकी आराध्या देवी दुर्गा इस बार सत्यवती और मालिन-प्रेमिका फुलवंती को देती है। फुलवंती (कुछ पाठों में दौना/कुसुमा) पत्नी सत्यवती से विचार-विमर्श कर सलहेस की मदद के लिए न सिर्फ पकड़िया पहुंचती है, युक्तियां भिड़कर राजा कुलेश्वर के पास पहुंचती है और सलहेस की मुक्ति हेतु निवेदन करती है।

कहती है कि वह आठ दिनों से भीतर असली चोर को हाजिर कर देगी, कारण सलहेस चोर नहीं है और असली चोर को खोजने के लिए सलहेस का साथ होना आवश्यक है। वह असली चोर के नहीं जाहिर करने पर किसी भी प्रकार का दंड भोगने की रजामंदी देती है। दोनों के बीच करार के कागजात बन जाने पर राजा कुलेश्वर सलहेस को जमानत पर छोड़ देता है। फुलवंती योगबल से जान गयी है कि असली चोर मोकामागढ़ का चूहड़मल है। फुलवंती और सलहेस क्रमश: नटिन और नट का वेश धारणकर मोकामा पहुंचते हैं। वहां एक बागीचे में नटों वाली सिरकी तान देते हैं। नटिन बनी फुलवंती चूहड़मल की पत्नी को गोदने के क्रम में फुसलाकर चोरी की गयी वस्तुएं इनाम में ले लेती हैं। फिर कामुक भावों के अभिनय से चूहड़मल को फुसलाकर अपनी सिरकी में ले आती है। वहां दारू पिलाकर फुलवंती चूहड़मल को निढाल कर देती है। फिल सलहेस उसे बांधकर मनचितरा भैंसा पर लागता है और दोनों चोरी के सामान सहित चूहड़मल को पकड़िया राजा कुलेश्वर के दरबार में हाजिर कर देते हैं। इससे वहां उपस्थित सारे लोग आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

राजा कुलेश्वर द्वारा अभियोग से बरी कर दिये जाने पर सलहेस और पुलवंती वहां से विदा होते हैं। विदा की इस घड़ी में अचानक चंद्रावती उपस्थित होती है। इस प्रार्थना के साथ कि उसने बालपन से ही सलहेस से मिलन की आस लगा रखी थी, सलहेस को अपने जीवन में उसे पत्नी के रूप में अवश्य स्वीकार करना चाहिए। लेकिन सलहेस उसका यह प्रस्ताव इस बार भी स्वीकार नहीं करते। चंद्रावती गीली आंखों से महिसौथा के लिए विदा लेते हुए सलहेस को देखती रह जाती है।

थोड़े बहुत फेर बदल के साथ राजा सलहेस के ये दोनों पाठ संपूर्ण मिथिलांचल में लोकप्रिय है और उपरोक्त दोनों पाठों में से दूसरे पाठ को डॉ. अविनाश चंद्र मिश्र ने अपनी पुस्तक ‘राजा सलहेस’ में स्थान दिया है।

5. राजा सलहेस: कला-संस्कृति का वर्तमान

संपूर्ण मिथिलांचल में सर्वाधिक लोकप्रिय होने के बावजूद राजा सलहेस से जुड़ी लोककला और लोककलाकारों को आज तक उचित प्रत्साहन नहीं मिला है। यह बात जितनी सलहेस से जुड़ी मिथिला चित्रकला पर लागू होती है, उतनी ही वहां की लोकनाट्य, गाथा गायन, वादन या मंचन की परंपरा पर भी लागू होती है। इसकी मूल वजह यह है कि सलहेस लोकनाट्य परंपरा या गायन-वादन परंपरा का निर्वाह करने वाले ज्यादातर कलाकारों का संबंध नीची जाति से है। मुख्य: रूप से इनके कलाकार बिहार की प्रमुख दलित जाति दुसाध और पासवान से आते हैं। इनके अलावा मुसहर, चमार, कोयरी, धोबी, जुलाहा, कहार या मलाह जैसी अन्य दलित जातियों के कलाकार भी राजा सलहेस से जुड़ी कला परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

5.1 उचित प्रोत्साहन का अभाव

राजा सलहेस के गाथा गायन, मंचन या चित्रण की परंपरा आज अपने उदगम स्थल पर लुप्तप्राय दिखती है, तो इसे समझना ज्यादा मुश्किल नहीं है क्योंकि इन दलित जातियों के प्रति आज भी गांव देहातों में कई तरह की भ्रांतियां और गलत धारणाएं है। सामाजिक विकास के पायदान पर सबसे नीचे बैठी इन जातियों को आज भी हीन भावना से देखा जाता है। यही वजह है कि लोकगायन, मंचन और चित्रण की लंबी परंपरा के बावजूद राजनीतिक, सामाजिक और यहां तक कि कलाकारों के अपने समुदाय के स्तर पर भी लोकोन्मुख और लोक कल्याणकारी कला परंपरा के वहन और उसके संरक्षण की रूची नहीं दिखती है।

राजा सलहेस के गाथा गायन और मंचन की परंपरा दुसाध और पासवान समाज में कितनी तेजी से लुप्त होती जा रही है, यह समझना बहुत मुश्किल नहीं है। बिहार में इस परंपरा के तीन सुप्रसिद्ध गुरुओं में से

एक बिसुनदेव पासवान के अपने गांव की नाच मंडली अब पूरी तरह से बिखर चुकी है। चिकना गांव के आसपास के कई गांवों में, जैसे जमैला, चपराम, छजना मझौरा, निर्मली, पकड़िया में कभी राजा सलहेस नाच पार्टी हुआ करती थी जो अब पूरी तरह से खत्म हो चुकी है। इन समूचे इलाके में अब जो कलाकार बचे हैं, उनमें बिसुनदेव पासवान से जुड़े कुछेक कलाकारों को छोड़कर किसी में अपनी कला परंपरा को जीवित रखने की रूचि नहीं है। चिकना गांव के ही एक स्थानीय कलाकार राम उदगार पासवान जो बिसुनदेव पासवान की संगत में गायन सीख रहे हैं और हारमोनियम वादक है, उनसे जब मैंने यह पूछा कि आप गाते बजाते हैं, इसे लेकर आपके परिवार की सोच क्या है। उन्होंने कहा कि पटना में इंटरमीडिएट की पढ़ाई कर रहे उनके बेटे और यहां तक की उनकी पत्नी को उनका गायन-वादन या पूजा-मंडलियों के साथ रहना अच्छा नहीं लगता है। वजह, लोग गायन-वादन या नाच करने वाले कलाकारों के प्रति अच्छा नहीं सोचते हैं। उनके बेटे ने तो साफ-साफ कहा कि उसे अपने पिता का गायन-वादन अच्छा नहीं लगता और वह लोककलाकार नहीं बनना चाहता है क्योंकि इसमें परिवार पालने भर जरूरी आमदनी संभव नहीं है।

चपराम में मुख्य रूप से आल्हा उदल का मंचन करने वाले कलाकारों में से एक हरिनारायण कहते हैं कि उचित प्रोत्साहन के अभाव में स्थानीय कलाकारों की आर्थिक स्थिति जर्जर है। ज्यादातर कलाकार या तो दिहाड़ी पर मजदूरी करते हैं या खेतिहर मजदूर है। ऐसे में वो दूसरे प्रदेशों में काम करना ज्यादा पसंद करते हैं क्योंकि वहां उन्हें उनके श्रम का ज्यादा पारितोषिक मिलता है। हरिनायारण इस तथ्य की तरफ भी इशारा करते हैं जिसके बारे में लोककलाकार राम उदगार के बेटे ने इशारा किया था। हरिनारयण कहते हैं कि राजा सलहेस के गायन-वादन या मंचन से लोककलाकार इस वजह से भी विमुख हो रहे हैं क्योंकि उन्हें नचनिया, बजनिया, बाइजी, लौंडा, लफुआ या बोंगा कहकर बुलाया जाता है। इससे उनके स्वाभिमान को ठेस पहुंचती है और परिणामत: स्थानीय

लोककलाकार अपनी विकसित कला परंपरा का त्याग कर रहे हैं। बिहार में लोककलाकारों और खासतौर पर दलित लोककलाकारों और उनकी कला परंपरा के लिए यह विकट स्थिति है।

5.2 कलाकारों में फैली मौसमी बेरोजगारी

बिहार के लोककलाकारों में मौसमी बेरोजगारी, अर्ध-बेरोजगारी या खुली बेरोजगारी सामान्य बात है, लेकिन राजा सलहेस नाच और गाथा गायन, वादन की परंपरा का निर्वाह कर रहे कलाकारों में यह ज्यादा दिखती है। हालांकि, यह बेरोजगारी चित्रकला से जुड़े कलाकारों में कम दिखती है। बिहार के शहरी इलाकों में रह रहे लोककलाकरों, जिनके पास आय के अपने साधन हैं या वो कलाकार जिन्हें दलित वर्ग में होने के कारण आरक्षण कोटे से सरकारी नौकरी मिल गयी (ऐसे कलाकारों की संख्या न के बराबर है) को छोड़कर ज्यादातर लोककलाकारों की आर्थिक स्थिति बेरोजगारी की वजह से दयनीय है।

नेपाल से सटे उत्तर मधुबनी के जयनगर से लेकर दरभंगा और समस्तीपुर तक ऐसे कलाकार बिखड़े हुए हैं जिनके पास न तो आय का कोई साधन है और न ही अपनी खेती। या तो वो मजदूर हैं या खेतिहर मजदूर। यह भी आवश्यक नहीं कि उन्हें लगातार काम मिलता है या मजदूरी मिलती है। ऐसे में कई-कई दिन तक उनके पास कोई काम नहीं होता है। खेतिहर मजदूरों में मौसमी बेरोजगारी भी आम बात है। ऐसे में उनके पास खेती के समय तो आय का साधन उपलब्ध होता है, लेकिन बाकी समय वो बेरोजगार होते हैं। इसका सीधा असर उनकी कला परंपरा पर पड़ रहा है। ज्यादातर लोककलाकारों अपनी कला को संजोना चाहते हैं, उसका विस्तार भी चाहते हैं, लेकिन इसमें वो अपनी अक्षमता जाहिर करते हैं क्योंकि बेरोजगारी की वजह से वो इस हालत में नहीं होते कि रोजगार तलाशने के सिवा वो किसी अन्य कर्म पर अपना ध्यान केंद्रित करें।

5.3 मंचन के लिए घटते अवसर

कलाकारों की माने तो जन्माष्टमी से लेकर बसंत पंचमी तक, यानी सितंबर से लेकर जनवरी तक उन्हें अपनी कला को प्रदर्शित करने का अवसर सबसे ज्यादा मिलता है, जाहिर है, इसी दौरान उन्हें अर्थोपार्जन का सबसे ज्यादा मौका मिलता है, अर्थात् ज्यादातर कलाकार जन्माष्टमी, दुर्गा पूजा, दशहरा, दिवाली, छठ पूजा से लेकर बसंत पंचमी या सरस्वती पूजा तक गायन-वदान और मंचन करते मिलते हैं। ऐसा इसलिए भी होता है क्योंकि दूसरे प्रदेशों में मजदूरी कर रहे कलाकार अक्सर त्योहारों के मौके पर अपने-अपने घर-परिवार के पास लौटते हैं। यहां उन्हें अपने परिवार के साथ समय बिताने का अवसर तो मिलता ही है, लोकनाटकों के मंचन, गाथा गायन और वादन के जरिए अतिरिक्त अर्थ लाभ भी हो जाता है। त्योहारों के मौकों के अलावा स्थानीय कलाकारों को मुख्य रूप से शादी-ब्याह के मौके पर ही यदा-कदा मंचन का अवसर मिलता है।

लोककलाकारों के लिए अवसर किस कदर घटते जा रहे हैं, इसका पता इससे भी चलता है कि त्योहारों के समय के अलावा अक्सर आर्थिक रूप से साधन संपन्न लोग उन्हें अपनी कला के प्रदर्शन का अवसर देते थे, लेकिन यह प्रवृत्ति तेजी से घटी है। अब ज्यादातर मौकों पर ऑर्क्रेस्ट्रा की टीम को बुला लिया जाता है या आल्हा-उदल का मंचन होता है। इनके अलावा वीडियो फिल्म्स की व्यवस्था का चलन भी अब बढ़ गया है। ऐसा इसलिए भी हुआ क्योंकि सलहेस नाच में पंद्रस से बीस कलाकारों की सहभागिता होती है। जो जजमान अपने महत्वपूर्ण अवसर पर सलहेस नाच का मंचन करवाते हैं, अक्सर उन्हें ही उन कलाकारों के पारितोषिक के अलावा उनके रहने और उनके ठहरने की भी व्यवस्था करनी होती है। इसका मंचन भी कम से कम दो से तीन दिन में पूरा होता है। ऐसे में अब ज्यादातर जजमान यह अतिरिक्त खर्च वहन नहीं करना चाहते हैं।

सलहेस नाच या नाटकों का मंचन करने वाले कलाकारों से इतर सलहेस की लोकगाथाओं पर आधारित चित्रकला करने वाले चित्रकारों की स्थिति

भिन्न है। उनके सामने मंचन करने वाले कलाकारों की तरह आजीविका का बड़ा संकट नहीं है क्योंकि वो अपनी कलाकृतियों को बेचकर अपनी आजीविका कमा लेते हैं। इसके अलावा ज्यादातर चित्रकार मधुबनी स्थित भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय के दफ्तर में सूचिबद्ध है। चित्रकला में दलित परंपरा का निर्वहन करने वाले चित्रकारों में शिवन पासवान, रौदी पासवान और उत्तम पासवान महत्वपूर्ण है और इन सबने अपनी बातचीत में यह स्वीकर किया अब सलहेस से जुड़े चित्रों की मांग कम हो गयी है या फिर न के बराबर है। ऐसे में उन्होंने अन्य परंपराओं पर आधारित चित्रकला को अपना लिया है।

5.4 कलाकारों की दयनीय आर्थिक स्थिति

लोककलाकारों के मुताबिक सलहेस नाच अक्सर साटा पर आधारित होता है। साटा वह स्थिति है जिसमें आयोजनकर्ता या जजमान कलाकारों को एक निश्चित अवधि में नाच को पूरा करने के लिए अनुबंधित करता है। बदले में वह दलनायक को एक निश्चित राशि पारितोषिक के रूप में देता है जिसे साटा कहा जाता है। एक नाच को पूर्ण करने में लगभग सात दिन का खर्च होता है और प्रति कलाकार प्रतिदिन अगर 200 रुपये भी दिया जाता है तब सात दिन का खर्च 1400 रुपये हो जाता है। बीस कलाकार के हिसाब से यह खर्च 28000 रुपये हो जाता है। कलाकारों को दुर्गापूजा या दशहरा के समय तो इस तरह का साटा मिल जाता है लेकिन बाकी समय में दो से तीन दिन का ही साटा मिलता है, यानी करीब दस से बाहर हजार रुपये का साटा। इस पैसे में ही कलाकारों के आने-जाने का खर्च और मंचन के लिए जरूरी साज-सामान का खर्च भी शामिल होता है, जिसमें हारमोनियम, नाल, झाल-करताल, नगाड़ा क्लारनेट, पीपीहरी और जरूरी पोशाक भी शामिल हैं जिन्हें जरूरत के हिसाब से प्रतिदिन किराये पर लिया जाता है। जाहिर है कलाकार को 200 रुपए से भी कम ही पारितोषिक मिलता है। ऐसे में कलाकार आल्हा या अन्य शास्त्रीय नाटक करना पसंद करते हैं जो एक दिन में संपन्न हो जाता है और बदले में

दस से पंद्रह हजार रुपये का साटा मिल जाता है। यह एक बड़ा कारण है जिसकी वजह से लोककलाकारों में सलहेस नाच या नाटक को लेकर रूचि घटी है।

5.5 आसान नहीं नाच मंडली का गठन

बिहार में लोककलाकारों के लीडर को दलनायक या टीम लीडर कहा जाता है। सलहेस लोकगाथा या नाटक के मंचन में पंद्रह से बीस लोक कलाकार शामिल होते हैं। अक्सर ये कलाकार अलग-अलग गांवों में रहते हैं और मंचन से पूर्व एकजुट होते हैं। दलनायकों के द्वारा कलाकारों को मंचन लिए एकजुट करना एक दुरुह कार्य है। रोजी-रोटी की तलाश में कलाकार बिखरे होते हैं। ऐसे में अक्सर एक टीम के सभी कलाकार एक समय में उपलब्ध नहीं होते हैं। तब दूसरी टीम के कलाकारों को शामिल करके मंचन पूरा किया जाता है या वैकल्पिक कलाकारों से काम चलाया जाता है। ऐसा अवागमन के साधनों के अभाव की वजह से भी किया जाता है।

अभी तक मैंने जिन टीमें तक अपनी पहुंच बनायी है, उनमें मधुबनी जिले में कोशी नदी तट पर बसे एक गांव बसीपट्टी की टीम तक पहुंचना सबसे दुरुह कार्य रहा। इस टीम के लोगों के लगातार संपर्क में रहने के बावजूद उनसे मिलना इस वजह से संभव नहीं हो सका क्योंकि उसके लिए कोशी नहीं पार करनी पड़ती और कोशी नदी को पार करने के लिए करीब दो कोस रेत पर चलना होता है। गांव देहातों में कलाकारों तक पहुंचने में इस तरह की समस्या ज्यादा मुश्किलें खड़ी करती हैं क्योंकि कई जगहों पर सड़कें नहीं हैं, तो कहीं सड़कें हैं तो आवागमन के साधन का अभाव। कई जगहों पर आवागमन के साधन ट्रेनों की समय सारिणी के हिसाब से नियत होते हैं। मसलन बिसुनदेव पासवान के घर चिकना गांव तक पहुंचने के दो साधन हैं। एक झंझारपुर के आगे खोपा चौक से ऑटो के जरिये जो घंटों इंतजार के बाद पूरी सवारी भरकर ही चलती है। या फिर दरभंगा से छोटी लाइन पर चलने वाली एक लोकल ट्रेन के

जरिए, जो सुबह दरभंगा से चलती है और शाम को वापस आती है। इस ट्रेन की टाइमिंग के हिसाब से ऑटो रिक्शा की उपलब्धता घटती बढ़ती रहती है।

कलाकारों को जुटाना इसलिए भी कठिन होता है क्योंकि ज्यादातर कलाकार मोबाइल फोन के आदी नहीं हैं। अक्सर कलाकारों के पास मोबाइल फोन तो होता है लेकिन वो उसका उपयोग नहीं करते हैं और उनका फोन घर के किसी सदस्य के पास होता है जो उसका इस्तेमाल करते हैं, ऐसे में उनसे संपर्क साधना मुश्किल हो जाता है। कलाकारों से संपर्क साधने में एक समस्या मोबाइल टावर को लेकर भी आती है। गांव-देहातों में मोबाइल की कनेक्टिविटी की समस्या भी है। ऐसे में कलाकारों तक पहुंचने का ज्यादा भरोसेमंद साधन किसी व्यक्ति को भेजना होता है। जाहिर है, यह पूरे दिन का काम होता है और जिस भी व्यक्ति को कलाकारों को एकजुट करने की जिम्मेदारी दी जाती है, उसे उसके पूरे दिन का खर्च भी देना होता है। चूंकि दलनायकों की आर्थिक स्थिति खुद ही बहुत मजबूत नहीं होती है और वह प्रतिदिन कुछ रुपये अर्जित कर अपना खान-पान कर पाने की स्थिति में होता है, ऐसे में वह अन्य कलाकारों से संपर्क साधने वाले व्यक्ति को उसका खर्च दे पाने में वह असमर्थ होता है। दलनायक इसका हल इस रूप में निकालता है कि उक्त पारितोषिक को मंचन के समय मिलने वाले पारितोषिक में जोड़कर उसे दे दिया जाता है।

5.6 सरकार से नहीं मिली कोई मदद

एक तरफ जहां दूसरे राज्यों की सरकारें अपने-अपने यहां लोककला और लोककलाकारों को समुचित प्रोत्साहन दे रहे हैं और उनका बाजार विस्तृत करने में जुटे हैं, बिहार में इसका सर्वथा अभाव दिखता है। ऐसा नहीं है कि सरकार के पास योजनाएं नहीं है या नीतियां नहीं हैं। सरकार के पास फंड का भी अभाव नहीं है। सरकार घोषणाएं करती है, उत्सवों महोत्सवों

का आयोजन करवाती है, लेकिन उसका लाभ आज तक गांव देहातों में रहने वाले लोककलाकारों को नहीं मिला। कुछ कलाकार लाभ मिलने की बात करते हैं, लेकिन लाभ से उनका तात्पर्य उस मानदेय से है जो कुछेक उत्सवों में प्रस्तुतियों के बदले उन्हें प्राप्त हुआ।

गांव देहातों से इतर शहरी इलाके में रह रहे कलाकार या उनके ठेकेदार इसकी वजह राजनीति की बताते हैं। शहरी इलाकों में रह रहे ज्यादातर कलाकारों के मुताबिक, जो पिछड़ी जातियों से आते है, बिहार में सत्ता तंत्र की कमान ज्यादातर अगड़ी जातियों के हाथ में रही है जिन्होंने दलित लोककला या लोककलाकारों को बढ़ावा देने में कोई रूची नहीं दिखाई। बाद में जब सत्ता की कमान पिछड़ी जाति के नेताओं के हाथ आयी तब उन्होंने भी स्वयं को अगड़ी जाति का मान लिया। इस बात को स्वयं अगड़ी जाति के लोककलाकार भी मानते हैं। राजा सलहेस पर पुस्तक लिखने वाले अवनिश चंद्र मिश्र के मुताबिक बिहार में ज्यादातर सरकारों ने निजी मनोरंजन के लिए लोककलाकारों का इस्तेमाल किया। उनसे तमाम वादे किये लेकिन उन्हें कभी पूरा नहीं किया।

ज्यादातर लोककलाकार मानते हैं कि उनके पास आजीविका के सीमित साधन होने की वजह से वो अपनी कला को विस्तार नहीं दे पाते। इसी वजह से वो अपनी कला में नए प्रयोगों का जोखिम भी नहीं उठाना चाहते और इससे लोककलाकारों के बीच यथास्थितिवाद की स्थिति पैदा हुई है, खासतौर पर गाथागायकों और नाच करने वाले कलाकारों के बीच। चित्रकारों की स्थिति थोड़ी भिन्न है क्योंकि उन्होंने अपनी चित्रकला को समय के अनुरूप ढाल लिया और बाजारवाद के इस दौर में खुद को बचाए हुए हैं। लेकिन, पेशे से मजदूर या खेतिहर मजदूर या बंटाईदार किसान होने की वजह से गायन वादन और मंचन करने वाले कलाकारों की स्थिति ज्यादा दयनीय है।

गायन, वादन और मंचन करने वाले लोककलाकारों की स्थिति चित्रकारों की अपेक्षा इस मायने में भी भिन्न होती है कि चित्रकार अगर अपनी कोई चित्र बेचता है तब उसे आमतौर पर उसका पूरा लाभ मिल जाता है, लेकिन समूह में गायन, वादन और मंचन करने वाले कलाकारों को उनका पूरा लाभ या पारितोषिक नहीं मिलता क्योंकि ज्यादातर आयोजनों में ठेकेदारों और बिचौलियों की भूमिका भी होती है। लोककलाकारों को ज्यादातर साटा या आयोजनों में शामिल होने का मौका इन्हीं बिचौलियों और ठेकेदारों की वजह से मिलता है, ऐसे में बिचौलियों कलाकारों की पारितोषिक का एक बड़ा हिस्सा अपने पास रख लेते हैं।